मुल्य रु. ५-००

सलंग अंक ७१ मार्च-२०१३

श्री स्वामिनारायण

मासिक

श्री स्वामिनारायण मंदिर
भीमपुरा का पंचम पाटोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) अमदावाद जामफलवाड़ी श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (२) श्री स्वामिनारायण मंदिर विहार के पाटोत्सव प्रसंग पर सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा पू. महाराजश्री की आरती उतारते हुए यजमान परिवार ।(३) श्री स्वामिनारायण मंदिर घनश्यामनगर धनाला (मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर अन्नकूट आरती उतारते हुए तथा शोभायात्रा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री (४) जसापर गाँव (मूलीदेश) के कलात्मक प्रवेश द्वार का उद्घाटन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में दाता रमेशभाई पटेल । (५) सुरेन्द्रनगर मंदिर में कथा प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन करते हुए यजमान श्रीहरिकृष्णभाई गांधी ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ६ ● अंक : ७१
मार्च-२०१६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०३
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०४
०३.	भगवान खम्भे को बांह में लिये	०६
०४.	ते जे ते	०८
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	०९
०६.	सत्संग बालवाटिका	११
०७.	भक्ति सुधा	१४
०८.	सत्संग समाचार	२३

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

अमे वारे वारे श्री नरनारायणदेव नुं मुख्यपणुं लावीए छीए, तेनुं तो एज हारद छे के, श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम अक्षरधाम ना धामीजे श्री नरनारायण ते ज आ सभा में नित्य विराजे छे, ते सारु मुख्यपणुं लावीए छीए अने ते सारु अमे अमारुं रुप जाणी ने लाखो रुपियानुखरच करीने शिखर बंधमंदिर श्री अमदावाद में करावीने श्री नरनारायणदेव नी मूर्तिनुं प्रथम पधरावी छे. अने ए श्री नरनारायणदेव तो अनंत ब्रह्मांडना राजा छे अने तेमा पण आजे भरत खंड तेना तो विशेष राजा छे अने प्रत्यक्ष श्री नरनारायणदेव तेने मेली ने आ भरत खंडना मनुष्य बीजा देवने भजे छे, ते तो जेम व्यभिचारीनी स्त्रीनुं तो पोताना धणी ने मेलीने बीजा जार ने भजे तेम छे। अने श्री नरनारायण भरत खंडना राजा छे , ने भागवत मां कह्युं छे। अने अमे आ संत सहित जीवुं ना कल्याणने अर्थे प्रगट थया छीए ते माटे तमे जो अमारुं वचन मानशो तो अमे जे धाम मांथी आव्या छीए ते धाममां तमने सर्वे ने तेडी जाशुं अने तमे पण एम जाण्यजो जे, अमारुं कल्याण थई चूक्युं छे। अने बड़ी अमारो दृढ विश्वास राखशो ने चाहिए तेम करशो तो तमने महाकष्ट कोईक आवी पडशे तेथी अथवा सात दकाली जेवुं पडशे ते थकी रक्षा करशुं. अने कोई ऊगर्या नो आरो न होय एवुं कष्ट आवी पडशे तो य पण रक्षा करशुं। जो अमारा सत्संगना धर्म बहु रीते करीने पालशो तो ने, सत्संग राखशो तो अने नहीं राखो तो महा दुःख पामशो, तेमां अमारे लेणा देणा नथी। प्रिय हरिभक्तों। जितने भी श्रीहरि के आश्रित भक्त हैं वे सभी उपरोक्त श्रीजी महाराज के इस वचनामृत के जीवन में अवस्य उतारें।

यह आज्ञा मानने में ही सभी का कल्याण है, श्रेय है, मोक्ष की प्राप्ति है। इससे अधिक कुछ कहना नहीं।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०१३)

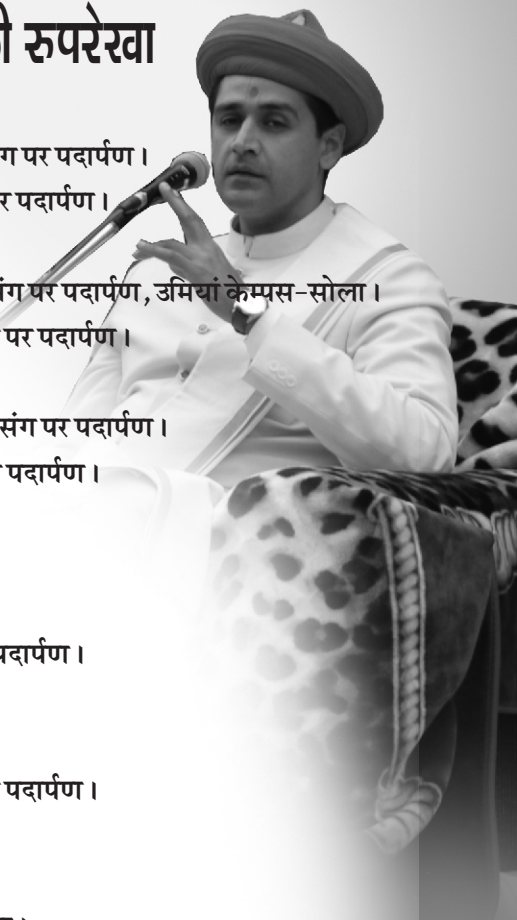

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद (घनश्यामनगर) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

२. श्री स्वामिनारायण मंदिर कुहा-शाकोत्सव प्रसंग एवं सभा प्रसंग पर पदार्पण ।

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगाँव शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा द्वारा आयोजित शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण, उमियां केम्पस-सोला ।

७. श्री स्वामिनारायण मंदिर रामोली जामफलवाडी मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
सायंकाल नाईरोबी के लिए प्रस्थान ।

८. से १२. तक श्री स्वामिनारायण मंदिर नाईरोबी (देश) के भूमिपूजन प्रसंग पर पदार्पण ।

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर उमरडा (मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर उवारसद पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा कथा प्रसंग पर पदार्पण ।
गोपालानन्दजी के २२५ वें जन्म जयंती प्रसंग पर पदार्पण ।

१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर बोरणा (मूलीदेश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२०. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२१. सिंगाली गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण ।

२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर माधवगढ (प्रांतिज) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२३. श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२४. श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२६. हलवद गाँव में मिनरल वोटर फेक्टरी के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण ।

२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०१३)

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

९. श्री स्वामिनारायण मंदिर वरसोडा पदार्पण ।

१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली वसंत पंचमी के उत्सव पर पदार्पण ।

२४. श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

भगवान खम्भे को बांह में लिये

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

विश्व में संप्रदाय का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर का अहमदावाद में भगवान श्री स्वामिनारायण की आज्ञा से आनंदानन्द स्वामी मंदिर निरमाण का कार्य करवा रहे थे । स्वयं श्रीहरि ५०० परमहंसो के साथ मस्तक पर पत्थर उठाकर मंदिर निर्माण कार्य में लगे थे । गाँव-गाँव से हरि भक्त स्वयं की बैलगाडी लेकर झालावाड तथा साबरकांठा की खान में से पत्थर ढोने का कार्य कर रहे थे । जिसे जितना समय मिलता था श्रद्धा की अनुकूला के अनुसार सेवा में लग जाते थे । ऐसे सेवा करने वालों के ऊपर महाराज प्रसन्न होकर अपने चरणारविंद की छाप देते थे । उन्हें गले लगाते थे । उन्हीं सेवा भावी भक्तों में एक परम भक्त अंकेवाडिया के जीवाभाई विरुगावा पटेल जो अपने घर का सभी कार्य छोडकर जब से मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ तब से अपने बैल तथा बैलगाडी लेकर रात-दिन सेवा में लगे रहते थे । ध्रांगध्रा की खान में से पत्थर के खम्भे भरकर अमदावाद लाते थे । करीब १५ बार बड़े-बड़े पत्थर के खम्भो से भरी हुई बैल गाडी अमदावाद ले आये । एकबार ऐसा हुआ कि जब वे खम्भो से भरी गाड़ी अमदावाद के लिये ला रहे थे उस समय बीच में ही एक बैल का पैर टूट गया । उस बैल को नजदीक के काकरावाडी गाँव में आराम के लिये बांधदिये । उस समय मंदिर का काम बड़े जोर से चल रहा था । बारम्बार संदेशा आता रहता था जल्दी पत्थरों को लेकर-पहुंचिये । भक्तराज घबड़ाये हुये थे । वे दूसरे बैलों को बैलगाडी में लगाते पर वे समर्थ नहीं हो पाते । उनके पुराने बैल की जोड़ी न मिलने से वे स्वयं एक तरफ लग गये । पत्थर का भार इतना अधिक था कि बैल जैसी उनकी क्षमता उन पत्थरों के ढोने में समर्थ नहीं हो पारही थी । फिर भी भगवान का नाम स्मरण करते हुये बीच-बीच में आराम करते हुये वे आगे बढने लगे । यह दृश्य देखकर जिस गाँव से गाड़ी निकलती वहाँ के नरनारी देखने-दर्शन करने आते और यथा सम्भव सहयोग भी करते, कोई पीछे से धक्का मारता तो कोई दूसरे बैल देने की बात करता । लेकिन प्रभु की भक्ति के प्रताप से उन्हें दूसरे बैल को लेने की इच्छा भी नहीं हुई । सम्प्रदाय का प्रथम मंदिर बन रहा था उसमें भी प्रभु की आज्ञा थी इसलिये उत्साह की कोई सीमा नहीं थी । इसलिये जीवा भगत कांकरीवाडी से थोड़े ही दिनो में अमदावाद पहुंच गये । अमदावाद पहुंचने का समाचार सुनकर उससे पहले ही स.गु. आनंदानंद स्वामी शहर से बाहर जाकर जीवा भगत के दर्शन हेतु खड़े हो गये । मंदिर में पहुंच कर जीवा भगत ने कहा कि इस बैल गाड़ी को महाराज खींच कर लाये हैं मैं तो बगल में चल रहा था । इस तरह की भावना व्यक्त करने से उनकी सेवा निर्गुण हो गयी । आनंदानन्द स्वामी उस पत्थर को अच्छी तरह गढवाकर शिल्पशास्त्र के अनुसार मंदिर के ईशान कोने में राधाकृष्ण भगवानके सामने प्रतिष्ठित करवाये ।

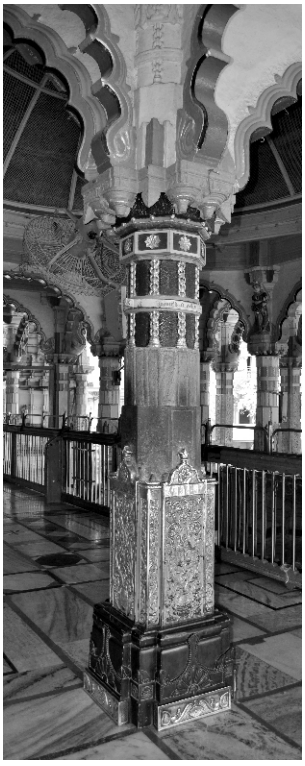

श्रीजी महाराज अपने हाथो अपनी बांहो में लेकर श्रीनरनारायण को जिस तरह प्रतिष्ठित किये उसी तरह जीवा भगत द्वारा लाये गये पत्थर को भी गले लगाकर

प्रतिष्ठित किये । उस भक्त की याद करके करुणार्द्र हो गये । इसके बाद श्रीजी महाराज ने कहा कि जो भक्त इस खम्भे का दर्शन करेगा उसे श्री नरनारायणदेव के दर्शन जैसा फल प्राप्त होगा । कभी भगवान के सामने पर आगया हो और इस खम्भे का दर्शन करके जो गायेगा उसे श्री नरनारायणदेव के दर्शन जैसा फल प्राप्त होगा । जो इस खम्भे का स्पर्श करेगा उसके जन्म जन्मान्तर के सभी पाप नष्ट हो जायेंगे । वह सभी पापो से रहित हो जायेगा । खम्भे के स्पर्श मात्र से यमयातना नहीं मिलेगी, इस तरह श्रीहरिने उस खम्भे का माहात्म्य समझाया है ।

उसके बाद श्रीजी महाराज अमदावाद में जब भी श्री नरनारायणदेव के दर्शनार्थ पधारते तब उस खम्भे को अपनी बांहो में भर लेते थे । बडे-बड़े संत उस खम्भे का स्पर्श करने के बाद ही प्रभु दर्शन करते थे । कितने संत हरिभक्त उस खम्भे को दंडवत प्रणाम करते । आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज प्रतिदिन खम्भे का दर्शन करते थे ।

अमदावाद मंदिर के प्रत्येक पत्थरों का श्रीहरिने तथा नंद संत एवं हरिभक्तो ने स्पर्श किया है । सुवर्ण से अधिक कीमत के प्रासदी के पत्थर है । जिन्हे दर्शन करना हो वे जल्दी दर्शन करलें । इस खम्भे को दस वर्ष पूर्व चांदी से मंडित किया गया था । वह प्रसादी की बैल गाडी प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री द्वारा निर्मित श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दर्शनार्थ रखी गयी है । इसी तरह अन्य प्रसादी की वस्तुये म्युजियम मे रखी गयी है, सभी का इसी तरह का विशिष्ट माहात्म्य है ।

यह प्रसंग हमने जीवा भक्त के वंशज मावजी छगन देवडी जाह्या भवान जो अंकेवाडिया के है उनके मुख से सुना है । उनका विवाह टेन्ट में हुआ है जहाँ पर वे मिले थे । उनके वंश परम्परा की डायरी में इस तरह लिखा हुआ है जो सत्य है ।

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
छपैया: : www.chhapaiya.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
टोरडा : www.gopallalji.com
नारायणघाट: www.narayanghat.com
वडनगर : www.vadnagar.com

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

ते जे ते

- अतुल बी. पोथीवाला
(मेमनगर-अहमदाबाद)

यह जो हमारी वाणी है वह हमारा स्वरुप है। श्रीहरि की परावाणी स्वरुप शिक्षापत्री में परमेश्वरने जिस सरलता से अपने स्वरुप का परिचय कराया है। वह बड़ा अद्‌भुत है। उस में ते जे ते इनतीन एकाक्षरी शब्दों को अच्छी तरह से एकत्रित करके एक स्वरुप प्रदान किया है। वही स्वरुप बड़ी सरलता से समजा सकता है।

शब्दशास्त्र में प्रतिपादित ते जे ते श्री कृष्ण भगवान का स्वरुप तथा धर्म-भक्ति तथा वैराग्य इन चारो के उत्कर्ष को बताता है।(शिक्षापत्री १०१)

भगवान श्रीकृष्ण की जो भक्ति ते जे ते धर्म के साथ करनी चाहिये।(शिक्षापत्री १०२)

जो ईश्वर है वे ते जे ते जिस तरह हृदय में जीव है उसी तरह अन्तर्यामी रुप में सभी कर्मफलको देने वाला ईश्वर को भी जानना चाहिये।(शिक्षापत्री १०८) समर्थ ऐसे भगवानश्री कृष्ण ते जे ते राधिकाजी के साथ समझना चाहिये। जब रुक्मिणीजी के साथ हो तब लक्ष्मीनारायण के रुप में समझना ते जे ते श्रीकृष्ण जब अर्जुन के साथ हो नरनारायण के रुप में समझना। (१०९, १११ शिक्षापत्री)

ते जे ते अर्थात् परब्रह्म श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम नारायण श्री स्वामिनारायण भगवान ते अर्थात् वेही ईष्टदेव है।

श्रीजी महाराज ने जो भी ज्ञान की वात की है वह सब अपने स्वरुप को समझाने के लिये कही है।

अक्षरातीत जो पुरुषोत्तम भगवान है ते जे ते सभी अवतारो के कारण है। सभी अवतार पुरुषोत्तम में से प्रगट होते है और उन्हीं में लीन होते हैं।(ग.म. १३)

ते जे ते भगवान का जिन्हे दृढ आश्रय हो वे निर्विध्न मार्ग पार कर लेते हैं।(ग.म. १३)

जो मूर्ति में तेज है वह प्रत्यक्ष महाराज ही है।

यह वात (ते जे ते) श्री स्वामिनारायण भगवान की वात जिन्हे समझ में आगयी वे ही अवतार के कारण को समझ सकते हैं। महाराज स्वयं कहते हैं कि हमे सत्संगी या परमहंस के पास से कोई स्वार्थ सिद्ध नहीं करना है, फिर भी हम सभी को साथ रखते हैं। किसी को बहुत प्रेम करते हैं, किसी को दूर करदेते हैं यह वात समझ में आजाय तो सभी का कल्यण हो जाय। यह वात समझकर जीवन में उतारने की जरुरत है यही हमारी आज्ञा है। यह वात जब तक जीव रहे तब तक नित्य करनी है मरने के बाद भी यह चिन्तन करते रहना है। (ग.म. १३)

ते जे ते इस शब्द समूह में श्रीहरि के परावाणी का कार्य है। इस में दोनो अर्थ छिपे हुये हैं। ते जे श्री स्वामिनारायण भगवान तथा तेज वे ही अपने इष्टदेव है। ते जे श्री सहजानंद महाराज का अति दृढ आश्रय तेज एकमात्र कल्याण करने का मार्ग है।

ते जे ते अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान को प्रार्थना करे कि हे महाराज ! हमे आपका सर्वोपरिता का भाव यथार्थरुप से समझमें आवे और आपका आश्रय दृढता के साथ हम कर सकें। शरीर रहे तब तक और शरीर के छूटने के बाद भी आप का ही आश्रय रहे।

अपने आगामी उत्सव

फाल्गुन शुक्ल-१५ ता. २७-३-२०१३ बुधवार को श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से दोपहर में १२-०० बजे श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर.

फाल्गुन कृष्ण-८ ता. ३-४-२०१३ बुधवार को जेतलपुरधाम श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव।

चैत्र शुक्ल-५ ता. १५-४-२०१३ सोमवार को अंजार (कच्छ) श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव।

चैत्र शुक्ल-९ ता. २०-४-२०१३ शनिवार को सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्यदिन रामनवमी अमदावाद मंदिर में उत्सव। अक्षर भुवन बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का पाटोत्सव।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा को श्री नरनारायणदेव जयंती के अवसर पर श्रीहरिने अमदावाद में संत तथा हरिभक्तो के साथ फूल दोलोत्सव का उत्सव किया था। सभी के साथ रंग खेले थे। उसी समय से प्रतिवर्ष अमदावाद मंदिर में आचार्यश्री परंपरा को स्थायी रखकर रंगोत्सव मनाते है। यही परम्परा रंगोत्सव की मूली में वसंत पंचमी के दिन मनायी जाती है। म्युजियम में हाल नं. ४ तथा ७ में पिचकारी दर्शनार्थ रखी गयी है। अमदावाद में जिस तख्तो पर खड़ा होकर रंग खेले थे वह तख्ता तथा रंगोवाला श्रीजी का वस्त्र भी होल में रखा गया है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि फरवरी-२०१२

रु. १०००००/-	निरमा फाउन्डेशन ट्रस्ट, अमदावाद
रु. १०००००/-	निमा मेमोरियल ट्रस्ट, अमदावाद
रु. १००००/-	जीतुभाई भुजंगीलाल महेता, वडोदरा
रु. १००००/-	अ.नि. लालजीभाई लवजीभाई पटेल अमदावाद, अ.नि. अमृतबहन लालजीभाई पटेल, अ.नि. हसमुखभाई लालजीभाई पटेल, जयंतीभाई, जयप्रकाशभाई तथा अश्विनभाई द्वारा प्रसादी के स्तम्भ हेतु
रु. ५१०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर, टोरडा
रु. ५१०००/-	अ.नि. पटेल जीवीबहन पोपटलाल जोईताराम परिवार, मोखासण
रु. २५०००/-	चंदुभाई त्रिकमदास पटेल, करजीसण
रु. ११०००/-	प.पू. बड़े महाराजश्री की तरफ से चि. सुव्रतकुमार तथा चि. सौम्यकुमार के जन्मोत्सव प्रसंग पर (पू. बिन्दुराजा के पुत्र)
रु. ११०००/-	विनोदभाई नीलाबहन पटेल, धर्मज
रु. ७१००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर, गवाडा
रु. ५५५५/५५	काचा टेलर्स - कपिलभाई, लेस्टर
रु. ५०००/-	जगदीशभाई ए. पटेल, माणेकपुर
रु. ५०००/-	भाविककुमार भगाभाई पटेल, माणेकपुर
रु. ५०००/-	नीता बहन, किंजलबहन, सविताबहन, कलोल
रु. ५०००/-	मीनाबहन के. जोषी, घनश्याम एजि. अमदावाद
रु. ५०००/-	भरतभाई दलसंगभाई चौधरी, भीमपुरा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (फरवरी-२०१२)

ता. १-१	बाबुलाल त्रिकमलाल ठक्कर, विरमगाँव।
ता. ७-२	केतनभाई शर्मा, यु.एस.ए.
ता. ९-२	पटेल प्राणजीवणभौई कानजीभाई, देवपुरा, परेश, विशाल तथा नील, ओस्ट्रेलीया
ता. १०-२	राजूभाई कान्तिभाई पटेल
ता. १०-२	स्वा. हरिप्रियदासजी, गांधीनगर की प्रेरणा से किरणबाई वी. गांधी.
ता. १४-२	श्री स्वामिनारायण मंदिर बहनो का घांचीवाड, सां.यो. कंचनबा, हीराबा, भगुबा, ध्रांगध्रा
ता. १६-२	नारणभाई अमथीदास पटेल परिवार, वडुवाला
ता. २३-२	जेमीबहन जयेशभाई पटेल, सीडनी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में आनेवाले को सूचित करना है कि म्युजियम में रखी हुई तस्वीर का फोटोलेना या विडियो शूटिंग करना सख्त मना है। भूतकाल में किसी ने फोटो या विडियों शूटिंग किया हो तो उसे प्रकाशित नहीं कर सकता है यदि किया तो उसके ऊपर नियमपूर्वक कार्यवाही की जायेगी। जिसकी सभी को जानकारी हो।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी
(गांधीनगर)

भक्तरक्षक भगवान

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

जिस तरह माता अपने बालक का ख्याल रखती है। समय होगया है, भूखा होगा, उसके लिये यह बनादूं, इसी तरह भक्त के लिये भगवान भी चिन्ता करते है। मेरे भक्त के घर इसकी कमी है, यह उसे चाहिये, उसके खेत में पाक इस वर्ष नहीं हुआ, इस तरह की प्रभु क्यों चिन्ता करते है। यही भगवान की भक्तवत्सलता है।

वात सौराष्ट्र में खोलडीयाद गाँव की है। भगवान के भक्त ऐसे होते है जो भजन-भक्ति-सत्संग में अपना समय बिताते है। गढपुर में दादाखाचर के दरबार में संत-भक्तों की सभा भरी हुई थी। उसी समय खोलडीयाद के भक्त रुडा ने अपने साथ लाये हुये बाजरी का पोटला एकतरफ रखकर महाराज को दंडवत प्रणाम करने लगे। सभा को जब रुडा भक्त प्रणाम कर चुके तो महाराजने पूछा कि भक्त ! यह पोटला में क्या है ? महाराज ! आप के कृपाप्रसाद से बाजरा की अच्छी खेती हुई है। जिसकी रोटी बनवाकर लाया हूँ। आपकी संतोकी, भक्तोंकी सेवा के लिये। अरे ! इसमें हमारे कृपाप्रसाद की क्या आवश्यकता। जैसे सबके हुये उसी तरह आपके भी हुए महाराज आप साक्षात् परमात्मा है। आप सब जानते है फिर भी मेरे मुख से सुनना चाहते है।

आज से थोड़ा समय पूर्व जहाँ देखिये वहाँ दुष्काल ही दुष्काल था। पूरा देश सूखा में घोंषित किया गया था। भूखमरा की स्थिति थी। सभी एक दूसरे को लूट मार रहे थे। बालको को भी बेच देते थे। उसी समय आप हमारे गाँव में पधारे थे। मेरे घर में भी एक अनाज का दाना नहीं था। उस समय आप मुझसे पूछे थे। घर में अनाज है ? और नहीं है तो खरीद लें, मैने कहा था पैसे घर में नहीं है। गहना बेच कर खरीद ले, गहनाभी नहीं है, करजा करके ले ले। यह भी आप कहे थे कि कोई रास्ता नहीं है तो बता, वर्ष में अन्न की कितनी खपत है। तब मैने कहा था ! पूरे वर्ष पांच मन अनाज की जरुरत है। अनाज बिना क्या करोगे ? उसी लिये आपसे प्रार्थना करता हूँ कि हे महाराज ! हमें अक्षरधाम में पहले उठा ले जाइये जिससे यह प्रश्न जल्दी छूटे। ऐसी क्या जरुरत ! क्यों ! मैं क्यों किसी को मारुं ! आप एक काम करो सुराखाचर के गाव में आइये। वहाँ खेती में काम कीजियेगा, समय निकल जायेगा। महाराज ! आप की बात सत्य है, लेकिन क्षत्रिय है, खेती करना नहीं आता। तब भूखे मरो। इसी लिये तो कहता हूँ कि महाराज, जल्दी हमे उठा लीजिए।

आप पूछे कि कुछ खेत में बीज डाले हो या नहीं ? महाराज बीज डाला तो हूं, लेकिन बरसात तो होता ही नही है। ५० बिघा बाजरा खेत में डाले है। लेकिन सूखे के कारण उगने के बाद भी सूख गया है। जब सूख गया है तो बरसात होने से भी उसे क्या फायदा होगा ? महाराज बरसात हो जाय तो निश्चित पाक होगी। इस तरह से आप मेरे साथ बात करते करते ५-६ गाँव तक पैदल चलते रहे, बाकी दूसरो को वापस कर दिये थे। बाद में हमें भी घर जाने के लिये कह दिये। मैं घर

जाकर सो गया । प्रातः होते ही बहुत सारे लोग दरवाजे पर आकर चिल्ला रहे थे रुडा भगत उठो, उठो..... आज आपके खेत में चमत्कार हो गया है । कहीं भी एक बूंद पानी नहीं और आप के खेत में पानी ही पानी भरा हुआ है । यह सुनते ही रुडा भगत घर में ताला बन्द करके दौडते हुये खेत में पहुंचे तो देखा कि सारा खेत पानी से लबालब भरा हुआ है । अब वे उसी खेत के पास एक झोपड़ी बनाकर रहने लगे । जब तक पूरा पाक तैयार नहीं हुआ तब तक वहीं रहे । मेरे खेत में पानी अन्यत्र कहीं नहीं तो यह आपका चमत्कार नहीं तो और क्या ?

बाजरा अच्छा हुआ है यह सुनते ही खेत का मालिक जो क्षत्रिय था वह खेत में आया और भाग मांगने लगा । गाँव के बहुत सारे लोग एकत्रित हो गये और कहने लगे दरबार इसमें आपका कोई हक नहीं यह बाजरा तो सूख गया था । लेकिन रुडा भगत की भक्ति पर प्रसन्न होकर भगवान स्वामिनारायणने यह चमत्कार किया है । यह बाजरा रुडा भगत का कहा जायेगा । आया हूँ तो प्रसादी का बाजरा लेकर जाऊँगा । बाद में उस खेत के मालिक दरबार को भी हिस्सा दिया । बाकी जो मेरे हिस्से का था उसमें से घर ले जाने से पूर्व कुछ पोटले में बांधकर यहाँ लाया हूँ । घर लेगया तो पांच मन अन्न हुआ .

प्रभु आप धन्य है । आपकी लीला न्यारी है, कौन समझ समकता है । यह बाजरा पहले आपको अर्पित करुं बाद में अपने जीव के लिये उपयोग में लूं । इसी लिये यह बाजरा का पोटला आपके चरण में अर्पित करने आया हूँ ।

आपकी कृपा से वर्ष सुंदर गया । मैं तथा मेरा परिवार सुखी हो गया । अब हम सुखपूर्वक आपकी भजन करते है । उसी समय सभा में बैठे हुए मुक्तानंद स्वामी बोले महाराज ! आप बड़े दयालु है । सभी भक्तों की खबर रखते हैं । बाद में महाराज सभा के बीच में ही पोटला खोलवाते है, इसमें से एक मुठ्ठी बाजरा मुख में डाले बचा हुआ बाजरा उसी पोटली में डालकर कहते हैं इसे सभी में प्रसाद के रुपें बांट दो । संत-हरिभक्त सभी बड़ी श्रद्धा से उसे खाये ।

प्रिय भक्तों ! आज भी भगवान तो वही है । वही करुणा आज भी प्रभु के हृदय में भक्तों के प्रति बहती रहती है । परन्तु भक्त की अटूट श्रद्धा प्रभु के प्रति होनी चाहिये । भक्ति सच्ची हो, श्रद्धा हो तो भगवान भक्त की सहायता अवश्य करते हैं । इसका कारण यह है कि भगवान स्वामिनारायण इस सत्संग में सदा प्रगटरुप में रहते हैं ।

●

भगवान का दिया हुआ

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

महाभारत की एक कथा है । कौरव एकत्रित होकर भीम को भोजन में जहर दे दिये । बाद में उनका हाथ पैर बांधकर नदी में डाल दिये । भीम नदी पडे लेकिन समुद्र के सहारे पाताल में चले गये । भीम इस तरह मरने के लिये पैदा नहीं हुये थे । वह तो मारने के लिये पैदा हुए थे । लेकिन कौरवो को इसकी खबर नहीं थी । जहर खिलाये, हाथ-पैर बांदकर नदीं में डालकर वे सब घर आगये । भीम पाताल में पहुंच गये । इधर प्रचार हो गया कि भीम की मृत्यु हो गयी । सभी तो मान ही गये लेकिन द्वारकाधीश भी यह सत्य मान गये । वे भी भीम की शोक सभा में आये ।

वे जानते थे फिर भी अज्ञानीकी तरह व्यवहार करते हुए सभी के साथ है । शोक सभा में सभी से अधिक दुर्योधन ने सोक व्यक्त किया । इस जगत की लीला बड़ी निराली है जो आता है वह जाता है । लेकिन दुर्योधन तुरंत बोला, यह ठीक नहीं हुआ । हमारी ईज्जत चली गयी । मेरा दाहिना हाथ टूट गया । भगवान इस रहस्य को जानते थे कि सही में तेरा दाहिना हाथ अब टूटेगा । दाहिना हाथ ही नही, दाहिना पैर भी टूटेगा । सब कुछ

सुनने के बाद भी प्रभु मौन ही रहे। धीरे धीरे इस वात को एक वर्ष बीत गया। हस्तिनापुर में भीम का श्राद्ध निश्चित हुआ। सभी ब्राह्मणों को भोजन का निमन्त्रण दिया गया। हस्तिनापुर के ब्राह्मण पीताम्बर धारण करके भोजन करने के लिये आने लगे। उसी समय भीम पाताल लोक में से बाहर आते हैं। उस समय भीम की दाढी बढ गयी थी। बाल अस्तव्यस्त था। इसके लिये भीम को कोई पहचान नहीं पाया। दूसरे ब्राह्मण भी उन्हे ब्राह्मण समझे।

भीम ने पूछा ब्राह्मण देव ! आप लोग कहाँ जा रहे हैं ? आपको खबर नहीं। भीम का आज श्राद्ध है। भोजन के लिये जा रहे हैं। आप भी चलिये। एक ब्राह्मण की संख्या और बढ जायेगी। भीम का स्वभाव विनोदी था। उनके मन में हुआ कि देखों तो सहीं क्या होता है। उन्हीं ब्राह्मण की पंक्ति में जाकर बैठ गये। सभी के साथ भोजन परसने के लिये जो भी आता डबल भोजन परसाजाता, सभी भोजन चबाकर खाते भीम उसे एक सेकेन्डमें भीतर उतार देते। सारा भोजन-मिष्ठान्न-पक्वान्न जो भी था वह सब खाली होगया। बड़े बडे बरतनमें जो पकाया या रखा गया था वह सब लाकर सामने रख दिया गया, सब खत्म हो गया फिर भी पेट नहीं भरा। उस श्राद्ध कर्म में भगवान उपस्थित थे। उन्हें हो गया कि भीम आ गये हैं। आने के साथ ही चमत्कार दिखा रहे हैं। कुंतीजी को इसकी खबर मीली, उन्हे ऐसा होगया कि इतना भोजन तो मेरा बेटा ही खा सकता है। दूसरा नही हो सकता। लेकिन सावित कैसे हो कि वही है। वह मेरे हाथ के लड्डू से ही तृप्त होता है। वे तुरंत रसोई में जाकर पांच लाडू बनाकर युधिष्ठिर से कहीं कि जाकर उसे खिलाकर आओ।

युधिष्ठिर उन की थाली में पांच लाडू रखदिये। एक लड्डू खाते ही उन्हें तृप्ति हो गयी सूदरे लड्डू खाने की जरुरत ही नहीं पड़ी। मां के स्पर्शवाले लड्डू से ही उन्हें तृप्ति मिलती थी। कुन्तीजी भोजन परसे तभी इन्हें तृप्ती मिलती थी।

माँ के हाथ का भोजन जिस तरह जीवन में तृप्ति ला देता है ठीक यही स्थिति भगवान के हाथ का स्पर्श जीवन में तृप्ति लादेता है।

सज्जनो ! यह कहानी विचार पूर्वक वांचने लायक है। परमात्मा जिन्हें पैसे देते हैं उन्हें तृप्ति (संतोष) होनी चाहिये। यदि ऐसा न हो तो असंतोष ही जीवन में अशान्ति का कारण बन जाता है। जो ऐसा मानता हो कि हमारे ऊपर भगवान की कृपा है। उन्हीं की कृपा से हमें नौकरी मिली है, उसमें २-५ हजार रुपये पंच भी रहे हैं। इतना बहुत है। जीवन में आनंद है। इसी को तृप्ति कहेंगे। जिन्हे ईश्वर नहीं देता उसके जीवनमें शान्ति नहीं मिलती। संतोष नहीं रहता, हाय, हाय बना रहता है। पूरी पृथ्वी को खरीद लेना चाहता हैं इस तरह दोंडता रहता है। जिसके जीवन में तृप्ती नहीं हो, यह समझ लेना चाहिये कि भगवान का दिया हआ नहीं है। जिन्हे भगवान देते हैं उनके जीवन में संतोष रहता है।

इसलिये भगवान की इच्छा मानकर जो भी धंधा, व्यापार, नौकरी, प्राप्त हुई हो उसमें संतोष करना चाहिये और भगवान को उसमे से भाग निकाल कर अर्पण करना चाहिये। बाद में घर में लाना चाहिये तभी भगवान का दिया हुआ कहा जायेगा। वही धन संतोष शांति आनंद देने वाला होगा। जीवन में दिव्य तृप्ति का एहसास होगा।

Caller Tune (वोडाफोन धारण करने वाले)

प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में श्री नरनारायण देव की महिमा बताते हुये कोलर ट्यून (वोडाफोन धारण करने वाले) अपने मोबाईल में चालू करने के लिये सी.टी. नाम महाराजश्री सी.टी. कोड २७०९३०

Caller Tune Name : Maharajshri
Caller Tune Code : 270930

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "परमात्मा के मूल स्वरुप की पहचान"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

जब जब परमात्मा इस पृत्वी पर मनुष्य शरीर धारण करते है तब तब परमात्मा के अवतार का तीन मुख्य हेतु होता है। श्रीकृष्ण भगवानने गीता में कहा है -

परित्राणाय साधूनां विनाशाय चदुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

साधु पुरुषो के रक्षण हेतु, तथा दुष्टों के नाश के लिये एवं धर्म की स्थापना के लिये मैं युग युग में प्रगट होता है। द्वापर युग के अन्त में श्रीकृष्ण भगवान जब पृत्वी पर अवतार धारण किये तब उनका भी तीन मुख्य कारण था ।

(१) साधुपुरुषो के रक्षण के लिये अर्थात् जो सत्य का आचरण करते है, धर्म का पालन करते हैं उन सभी की रक्षा के लिये स्वरुप धारण करते है अधर्म का आचरण करने वाले कंस से अपने माता-पिता की तथा कौरवो से पांडवो की अधासुर से गोपबालों की रक्षा किये थे।

(२) दुष्टों के विनाश के लिये - अर्थात् जो अधर्मी लोग है विना कारण दु:ख देने वाले हैं ऐसे दुष्कर्म करने वालों को दंड देने के लिये परमात्माने अपने जन्म के समय से ही पूतना शकटासुर, बकासुर, वत्सासुर, अघासुर, कंस, शिशुपाल, जरासंध, कालयवन तथा अंत में छप्पन करोड़ यादवों का संहार किये।

(३) श्रीकृष्ण भगवान का तीसरे अवतार का कारण एकांतिक धर्म की स्थापना करना । परमात्मा अपने जाने के अन्तिम समय में पीपल वृक्ष के नीचे प्रभासक्षेत्र में विराजमान थे। उस समय वे विचार करते हैं कि दो कार्य तो अच्छी तरह पूर्ण हो गया, जिसे पूरा करने में सवासों वर्ष बीत गया। जो मेरा तीसरा कार्य है उसे किसी अन्य को सौंप देना है। इस तरह विचार करते है। उसी समय वहाँ पर मैत्रेयऋषि तथा उद्धवजी आ गये । भगवानने उनसे कहा कि आप दोनो मेरे स्वरुप को जगत में प्रतिष्ठापित करना । इसके साथ ही धर्म की स्थापना करना । यह सुनकर मैत्रेयऋषि को कहा कि हमारी उम्र पूर्ण हो गयी है अत: मुझसे सम्भव अब नहीं है । पुन: भगवान ने मैत्रेय से कहा कि विदुर जी को मेरे स्वरुप की पहचान कराना है । एकांतिक धर्म की स्थापना करने का उत्तरदायित्व उद्धवजी को सोंप दिये ।

उद्धवजी मूल स्वरुप की पहचान कराने के लिये जगत में घूमने लगे। परंतु जब जब भगवान के चरित्र का वर्णन करते तब-तब गला भर जाता था। आवाज बंद हो जाती थी। इस तरह उन्हे ११४ वर्ष बीत गये। फिर भी वरपरमात्मा के स्वरुप की पहचान नहीं करापाये। बाद में भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण किये। प्रार्थना करने लगे कि हे प्रभु ! आप का प्रचार मैं किस तरह करुं ? परमात्मा ने प्रेरणा की कि आप बद्रिकाश्रम में जाइये। बद्रिकाश्रम में श्री नरनारायणदेव तप कर रहे हैं ।इस तरह उद्धवजी बद्रिकाश्रम में जाकर तीन हजार वर्ष तक तप करते हैं। भगवान स्वामिनारायण कहते थे कि मैं किसी पर जल्दी प्रसन्न भी नहीं होता और जल्दी नाराज भी नहीं होता । भगवान श्री

प्रसादीभूत गवाडा
श्री स्वामिनारायण मंदिर का
३१ वाँ पाटोत्सव
श्री नरनारायणदेव की जय.....
श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठ
गाँव सफाई अभियान

श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा के पंचम् पाटोत्सव

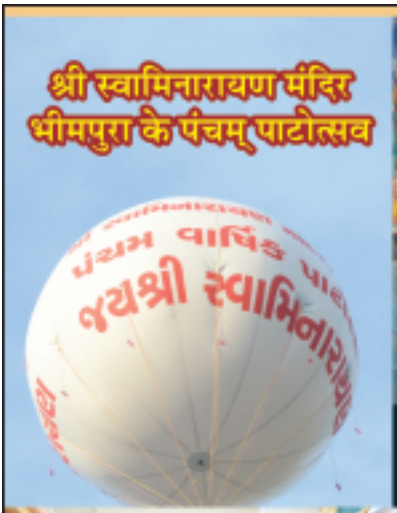

चौधरी समाज के चोखड़ुं

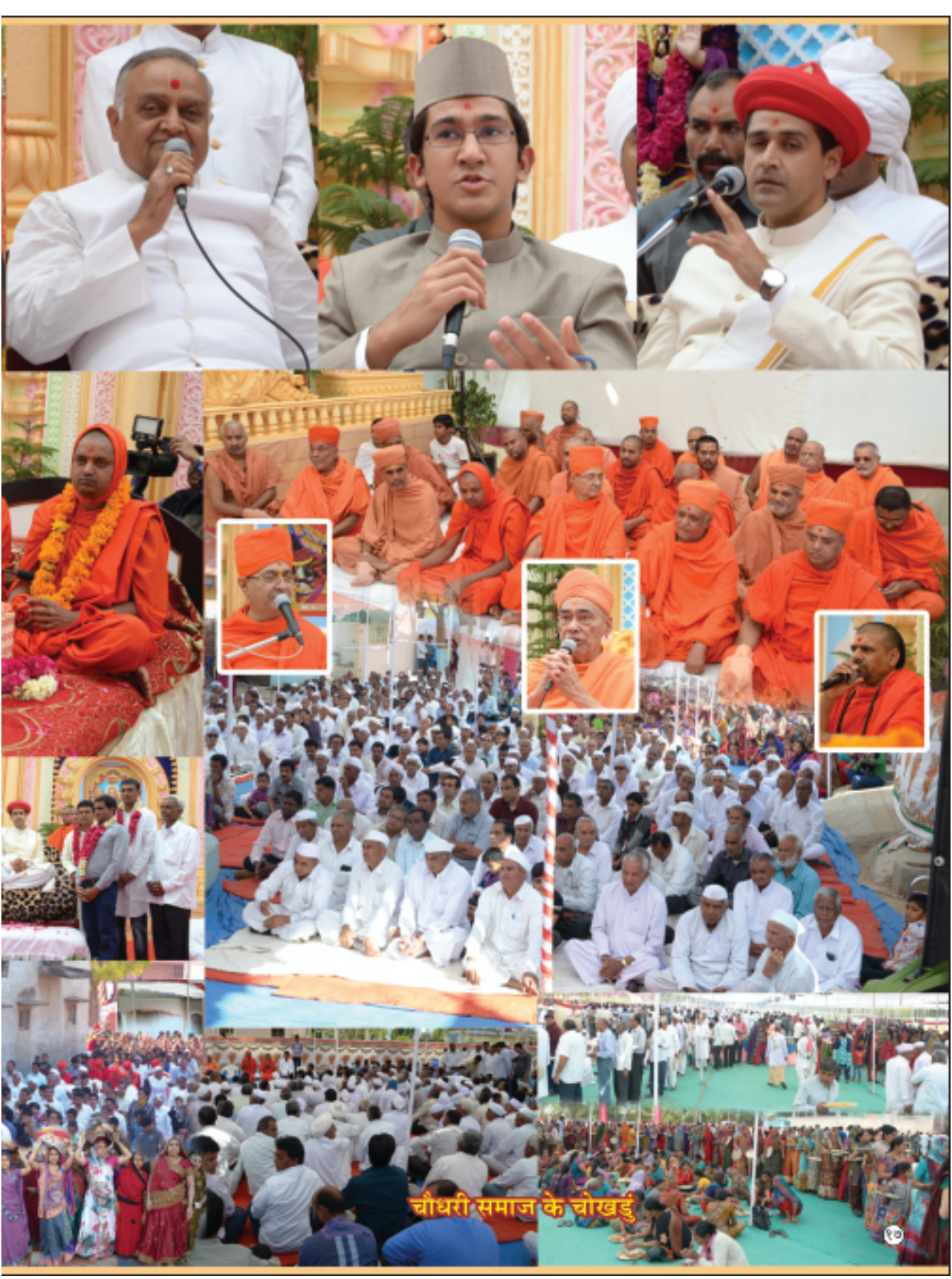

प्रसादीभूत गवाडा
श्री स्वामिनारायण मंदिर का
३१ वाँ पाटोत्सव

शोभायात्रा

नरनारायणदेव में तथा भगवान श्री स्वामिनारायण में थोडा भी अन्तर नहीं है। दोनो एक ही है. उद्धवजी की तीन हजार वर्ष तक की प्रार्थना सुनकर श्री नरनारायणदेव प्रसन्न होते हैं। वरदान मांगने को कहते हैं कि आपने जो एकान्तिक धर्म की स्थापना के लिये कह रहे हैं वह संम्भव नहीं हो सका। अब आप कृपा कीजिये। तैतीस करोड देवता प्रगट हुए। लेकिन वे देवी-देवता पहचान नही करा सके। शंकर भगवान भी शंकराचार्य के रुप में आकर दक्षिण में धर्म का प्रचार किये। फिर भी उद्धवजी को हुआ कि जैसा चाहिये वैसा धर्म स्थापना नहीं हुआ। इस के बाद रामानुजाचार्यजी सवासौ वर्ष पृथ्वी पर रहे फिर भी उद्धवजी को शांति नहीं मिली। बाद में उद्धवजी श्री नरनारायणदेव के पास बद्रिकाश्रममें आकर कहते हैं कि आपके सिवाय कोई ऐसा नहीं है जो यह कार्य कर सके। श्री नरनारायणदेव भगवान ही पृथ्वी पर मनुष्य रुप धारण करके यह कार्य करने का शुभ संकल्प किया। उसी समय ८८ हजार ऋषियों का आगमन होता है। ऋषियों का स्वागत करके भगवानने सभी के आनेका कारण पूछा। भगवान से सभी ने अधर्म के उपद्रव की बात की। उसी समय वहाँ पर धर्मपिता तथा माता मूर्तिका आगमन होता है। भगवान नारायण उन दोनों का स्वागत करते हैं उसके बाद मुनि लोग भगवान से पृथ्वी पर हो रहे अधर्म के उपद्रव की वात करते हैं। सभी लोग भगवान की तरफ देखते रहते हैं। उस समय भगवान की प्रेरणा से दुर्वासाऋषि आते है, सभी लोग अपने विचारों में लीन रहते हैं ऋषि का स्वागत न होने से वे स्वयं अपने को अपमानित मानने लगते है। परिणाम स्वरुप सभी को श्राप देते हैं। आप सभी लोग मनुष्यभाव को प्राप्त कीजिये। असुरों से अनादर के पात्र बनें। बाद में धर्म देव प्रार्थना करते है। जिससे वे प्रसन्न होकर कहते है - कि हे धर्मदेव ! आप मूर्ति देवी के पति होंगे और मूर्ति देवी से ही भगवान नारायण पुत्र के रुप में उत्पन्न होंगे। असुरों से रक्षा करेंगे। इस तरह भगवान श्री नारायण देव ही श्री स्वामिनारायण के रुप में पृथ्वी पर प्रगट होकर अपने मूल स्वरुप की पहचान करवागे। सभी को आज्ञाकिये कि आप सभी अपनी माता-पिता की शोधकरके उनके यहाँ शरीर धारण कीजिये। उद्धवजी को कहे कि आप जाइये पीछे से हम भी आयेंगे। आप के नाम से ही वह सम्प्रदाय जाना जायेगा। हम लोग कितने भाग्यशाली है, हमें घर बैठे भगवान मिल गये। हमें स्वयं भगवान नरनारायण देव मिल गये हैं। वह मूर्ति नहीं है बल्कि मूर्ति में प्रत्यक्ष प्रभु ही हैं। नरनारायणदेव बहुत दयालु है। आज भी अपने आश्रितो के लिये तप करते हैं। उन्हें तप की जरुरत नहीं है। क्योंकि वे स्वयं भरतखंड के राजा है। परंतु तप करके अपने आश्रितों को तप का फल प्रदान कर देते हैं। विना तप के मूल स्वरुप का ज्ञान सम्भव नहीं है। संसार में भी सामान्य आदमी भी विना पुरुषार्थ के क्रियाशील हनीं होता है। परिवार के पोषण हेतु कितना उधम करता है। जब भगवान श्रीनरनारयाण देव जगत के माता-पिता है तो अपने आश्रितों के लिये तप करने है और तप का फल आश्रितों को देते हैं। इसलिये उनकी आज्ञा में हमें रहना चाहिये तभी कल्याण सम्भव है।

●

परमात्मा के नाम स्मरण की महिमा

सां.यो. कुंदनबा गुरु सां.यो. संचनबा (मेडा)

हे भक्तो ! परमात्मा के नाम स्मरण से सभी पाप नष्ट हो जाते है। लोया के छठ्ठे वचनामृत में श्रीजी महाराज ने कहा है कि ध्यान करते समय गलत विचार आवे तो जोर से स्वामिनारायण - स्वामिनारायण मंत्र का जब करना चाहिये। स.गु. शतानंद स्वामीने सत्संगिजीवन में लिखा है कि चाहे जितने बड़े पाप का प्रायश्चित करते हों लेकिन उसमें भगवान के नाम का स्मरण नहोतो सम्पूर्ण फल

नहीं मिलता है । निष्कुलानंद स्वामी ने हरिबलगीता में लिखा है कि -

पुरुषोत्तम प्रगटनुं नाम निर्भय निशाण,
जे जन जीने उच्चरे ते पामे पद निर्वाण.
त्रिलोकमां तपासता, नावे नारायण नाम तुल्य,
पतित ने पावन करवा, ए छे निधिअमूल्य.
हिरण्यकशिपुश्रवणे सांभळ्यो, नारायण नाम नो नाद,
तप तजी त्रिपालजी तेना थया भक्त प्रहलाद.

भगवान के नाम का स्मरण का फल प्रत्यक्ष भगवान के नाम स्मरण जैसा है।

भागवत में अजामिल का एक प्रसंग आता है । महापापी उन जामिल नारायण का नाम लिया तो उसका सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गया।

यमदूत के यमपास से मुक्त हो गया। भगवान के नाम स्मरण से साधारणजीव भी उच्चस्थिति को प्राप्त हो जाता है । जिस तरह वाल्मिकी पूर्वावस्था में लूटमाट-हत्या इत्यादि करता था जब नारदजी मिले उनके द्वारा रामनाम प्राप्त करके उसी का अखंड स्मरण करता रहा है - जिससे उसे त्रिकालज्ञान प्राप्त हो गया। परिणाम स्वरुप वह वाल्मीकिऋषि हो गया। यह महत्व भगवान के नाम स्मरण का है । भगवान के नाम स्मरण से वासना नष्ट होजाती है। काशी के रामाभंगी को काशी नरेश की पुत्री का दर्शन होने मात्र से उसकी वासना जग गयी । परंतु राजकुमारीने उससे कहा कि गंगातट पर बैठ कर राम नाम का स्मरण कर बाद में हम तुम्हें मिलेंगी। अब ऐसा हुआ कि राजकुमारी के स्मरण की जगह राम ही स्मरण में आने लगे । महान संत के नाम से प्रतिष्ठित हो गये । तुलसीदासजी लिखते हैं कि,

ऊँचाकुल किस काम का जहाँ नहीं हरिका नाम,
तुलसी ता ते श्वपचभला, जा मुख में हरिकानाम.
सुख के शीर शील पडो, जो नाम हृदय से जाय,
बलिहारी वह दुःख की पल पल नाम जपाय.

व्रतादि के समय भी हरिनाम स्मरण से पाप नष्ट हो जाता है जिस तरह अखंड दीपक अंधकार को नष्ट करता है उसी तरह हरि का अखंड नाम स्मरण से भी पाप नष्ट होता है। दीपक बुझते ही अंधकार आजाता है - दीपक न बुझे तो प्रकाश बना रहता है इसी तरह हरिका नाम स्मरण नित्य निरन्तर करते रहना चाहिये।

स्वामिनारायण संप्रदाय में एक प्रसंग आता है - कच्छ प्रांत में दहिंसरा नाम का एक गाँव है। उस गाँव में केसरभाई नाम के एक भक्त रहते थे। वे खेती करते थे। उनके खेत में एक कालिया नाग रहता था। सभी उनसे कहते कि इस नाग को मरवा दीजिये। अन्यथा कभी वहि खतरा करेगा । केसरभाईने कहा कि मैं स्वामिनारायण का भक्त हूं, भगवानने हिंसा करने के लिये मना किया है। संयोगवश एकदिन प्रातःकाल खेत में पानी भरने गये, उन्हें सर्प ने डंस लिया वे भागते हुये स्वामिनारायण मंदिर में आये, वहाँ पर सारा गाँव एकत्रित होगया। सभी लोग झाडफूंक करने लगे। कोई कहता कि मारने के लिये कहे तो मारे नहीं अब खुद परेशान हो गये । उन्होंने कहा कि मुझे किसी झाडने फूंकने वाले की जरुरत नहीं मैं स्वामिनारायण मंत्र का जपकर रहा हूँ ठीक हो जाऊँगा। सभी लोग उनके साथ मिलकर हरिनाम स्मरण करने लगे। धीरे धीरे सर्प का विष उतरने लगा । इससे यह स्पष्ट होता है कि हरिनाम स्मरण करने से नाना विधरोग दोष-मोह-पीडा सभी नष्ट होजाती है। इसी तरह स्मरण करते रहने से अन्तिम समय में स्मरण होजाय तो संसार सागर से तर जायेगा।

भगवान की अटूट श्रद्धा बनी रहे तथा गादी वाला में अटूट श्रद्धाबनी रहे एसी भगवान के चरणों में प्रार्थना।

●

जहाँ सुमति तहं संपतिनाना

सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

गुजराती में ''संप त्यां जंप'' की कहावत प्रसिद्ध है। जीवन में अखंड शांति के लिये यह उक्ति चरितार्थ होती है। सतयुग के समय परिवार में एक दूसरे के प्रति स्नेह, आदर का भाव रहता था। विवेक, मर्यादा, संयम, त्याग इत्यादि का भाव अधिक पाया जाता था। यह सब सद्‌गुण एकता का परिचायक है। परिवार में इसतरह की भावना शांति प्रदान करती है, सुख को देती है। इससे अखंड शान्ति ही नहीं बल्कि शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, व्यवहारिक, आध्यात्मिक इत्यादि जीवन के सभी क्षेत्र में सुख प्रदान करने वाली है। एकता में ही जीवन सुखी होता है। आज के युग में गमनागमन की व्यवस्था, फोन द्वारा संदेश का व्यवहार सभी साधन समग्र विश्व को एक दूसरे के नजदीक कर दिया है। समग्र विश्व एक कुटुम्ब बन गया है।

आज के युग में मोबाईल, टी.वी., वीडियो, इन्टरनेट, कम्प्यूटर इत्यादि अद्यतन सभी साधन मानवजीवन को अशान्त बना दिये है। मावन अब शांति की झंखना कर रहा है, उसे कही शांति नजर नहीं आ रही है। अखंड अशांति के कारण मानव कृत्रिम आनंद, संतोष तथा शांति के लिये कुसंग, कुटेव, व्यसन में फंसता जा रहा है। ऐसे कृत्रिम अशांति वाले साधनो में फंसा हुआ मानव डायाबीटीश, ब्लडप्रेशर, केन्सर इत्यादि रोगों से आक्रांत होता जा रहा है। ऐसे रोगो से आक्रांत मानव का स्वभाव अभिमानी, क्रोधी, चीडचिडा स्वभाव, अशांत होने के कारण अघटित घटना घटा देता है अर्थात् न करने के योग काम कर बैठता है। इसके लिये महौषधिएक मात्र पारिवारिक एकता।

आज के जमाने में देखने के लिये मिलता है कि एक पिता से जन्म लेने वाले सभी भाईयों में मन मेल नहीं खाता, मतभेद रहता है। जिस में एकता नष्ट होती है और अशांति का माहौल बन जाता है। यहीं से उसका जीवन नरक जैसे होने लगता है। मेरा-तेरा भाव ही भाइयों में भेद पैदा करदेता है। यह मेरा बेटा यह मेरा धन यह मेरी व्यस्था या यह मैने किया है तुमने क्या किया इत्यादि जब चालू हो जाय तब समझ लेना चाहिये कि यहाँ से अलगावबाद का सिद्धान्त चालू हो गया है। थोडी त्याग की भावना रखकर कमी विना देखे अर्थात् दोष एक दूसरे में विना देखे जो कार्य करता रहेगा निश्चित ही वहाँ एकता होगी और विकासभी वहीं होगा। अन्यथा विवाद होगा विकाश रुक जायेगा। संबंन्धजोडने मे विकास है - सबंधतोडने में नहीं।

जिसके घर में सत्संग का संस्कार है उसके घर में निश्चित ही एकता रहेगी। जहाँ एकता होती है वहाँ भोजन सात्विक होता है। जहाँ एकता नहीं रहती वहाँ भोजन राजसी या तामसी भोजन होता है। जहाँ एकता नहीं रहती वहाँ भगवान का वास नहीं रहता, वहाँ से भगवान दूर रहते हैं और उनके यहाँ का प्रसाद भी भगवान ग्रहण नहीं करते। आज के जमाने में मां-बाप भी अपने बेटे को कुछ नहीं कह सकते। बेटा को कुछ बाप कहता है तो बेटा डांटकर कह देता है शांति से बैठे रहो न ! एकता के अभाव में सभी स्नेह रहित हो जाते है जिससे न बोलने वाली वाणी बोलते हैं। दुर्गुण घर में निवास करने लगता है। घर के लिये दिवाल जैसे नहीं बल्कि फूल जैसे बनना चाहिये। आज के जमाने में जहाँ पर परमात्मा की कृपा होगी वहीं पर एकता, सदाचार, नीति, संयम, सेवा, दया, त्याग, विनम्रता, परोपकार की भावना, निरभिमानिता, स्वार्थ का अभाव इत्यादि सद्‌गुण का भाव रहेगा। यह सभी तभी संभव है जब सत्‌पुरुष का सत्संग होगा। दुष्ट पुरुषों के संग से जीवन अभिमान

ग्रसित होगा फिर तो परिवार विघटित होने से कोई बचा नहीं पायेगा।

रामायण में तुलसी दासजीने लिखा है -

जहाँ सुमति तहाँ संपति नाना,
जहाँ कुमति तहाँ बिपती निदाना।

जहाँ एकता होगी वहाँ अनेको प्रकार की संपति आयेगी। जहाँ पर एकता नहीं होगी वहाँ पर अनेकों प्रकार से आपत्ति आयेगी। उसे कोई रोक नहीं सकता। जिस तरह एक घास के तिन के को कोई तोड़ देता है लेकिन घास के समूह से बनी रस्सी को हाथी भी नहीं तोड़ पाता यह न्याय (नीति) जीवन में सभी को उतारना चाहिये। जीवन सुखी बनाने की यही चाभी है। सभी का जीवन एकांतिक बने, सभी का जीवन सुखी हो इस तरह का वातावरण बनाने का प्रयास सभी को करना चाहिये। भगवान सभी को सद्‌बुद्धि प्रदान करें ऐसी परम कृपालु भगवान स्वामिनारायण के चरणों में प्रार्थना।

खंडग्रास चंद्रग्रहण

चैत्र शुक्ल-१५ ता. २५-४-२०१३ गुरुवार को खंडग्रास चंद्रग्रहण है।

● बेधदोपहर में ४-२२ ● स्पर्श रात्रि में १-२१ पर ●मोक्ष रात्रि में १-३५ पर

घनश्यामनगर (नवा धनाला) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद

श्री नरनारायणदेव का निमित् शोधकर महाराज पृथ्वी पर अवतरित हुए थे। श्री नरनारायणदेव की मूर्ति अपने पूजा में रखनी चाहिये। नये नाटक हमें अच्छा नहीं लगता है। २१२ श्लोक लिखें हैं। २१३ वां भी नहीं। नरनारायणदेव की मूर्ति श्रीजी महाराजने दोनो देश के हरिभक्तों को पूजा में रखने की आज्ञा की है। हम सभी माला फेरते हैं। सभी भगवान स्वामिनारायण का ध्यान करते हैं। ऐसा नहीं मानने में भजन में सुख नहीं मिलेगा। झालावाड देश में देवका हिस्सा अच्छा मिलता है। जो हरिभक्त अपने भाग का देने आते हैं जो देव को होकर रहे है वह अच्छी बात है। आज तो कितने ऐसे अलगाव वादी हो गये है जिसकी कोई सीमा नहीं हैा। एक दृष्टांत है। एक व्यापारी यही वेचने गया। मटकी में दहीं भरी हुई थी। एक गाँव से दूसरे गाँव जा रहा था। दोपहर का समय था। प्यास लगी हुई थी, रास्ते में कूंवां दिखाई दिया। दही का मटका वृक्ष में लटकाकर सीढी से कूवां में नीचे उतरा। जिस वृक्ष में मटका को लटकाया था। उस वृक्ष पर बन्दर बैठा था। वह नीचे उतरा और दही पीने लगा। जितना पीने में आया उतना पीया बाकी गिरा दिया। नीचे भेंडा खड़ा था। उसके ऊपर दही गिरी और मुह दही वाला हो गया। वह भाई पानी पीकर ऊपर आया तो देखा कि दही का घड़ा गिरा हुआ है और बगल में भेंडा भी है। उसने निश्चित कर लिया कि इसने ही दही गिराई है अब उस भेंडे को वह मारने लगा। चोरी किया किसने मार खाया कौन। श्रीजी का सिद्धान्त मेरा तेरा वाला नहीं है। यदि हम भगवान को सर्वोपरि मानते हों तो भगवान ने जो बताया है वही ठीक है वैसा ही करना है ऐसा विचार मन में सदा रहना चाहिये। इसी लिये अपने उपास्य इष्टदेव को मंदिर में प्रतिष्ठित किया है। सुंदर मंदिर, शास्त्र हमें दिया है। जिसका बनकर रहना है उसीने सुंदर मंदिर, शास्त्र हमें दिया है। जिसका बनकर रहना है उसी में सुख भी है। ऐसा अपनी सन्तान में ज्ञान होना आवश्यक है। तभी सत्संग उसके जीवन में उतरेगा। छोटे कोई दोष होतो उसका त्याग करके प्रभु का बनकर रहेंगे तो निश्चित ही सत्संग देदीप्यमान हो जायेगा।

जामफलवाड़ी (रामोल) में नूतन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु.स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से तथा जामफलवाडी विस्तार के सभी भक्तों के साथ सहकार सेवा से ता. ३-२-१३ से ७-२-१३ गुरुवार तक नूतन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव श्री स्वामिनारायण मंदिर जामफलवाडी में मनाया गया।

महामहोत्सव अंगभूत श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण का पाठ स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा सगु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने किया । महामहोत्सव अंगभूत दूसरे कई छोटे-बड़े आयोजन हुए । जिस में पोथीयात्रा, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, प्रतिष्ठा यज्ञ, अखंड धून, रुक्ष्मणी विवाह, व्यसनमुक्ति अभियान, नगरयात्रा, अन्नकूट दर्शन, शोभायात्रा आदि प्रसंग धूमधाम से मनाये गये । प.पू. महाराजश्री कथा पूर्णाहुति प्रसंग पर पधारे थे । सभी को दर्शन-आशीर्वाद दिये । बहनो को आशीर्वाद देने प.पू. गादीवाळाश्री भी पधारी थी । प्रसंग में स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (कालुपुर महंतश्री), स.गु.स्वा. लक्ष्मणजीवनदासजी (एप्रोच), ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी, स्वा. नीलकंठचरणदासजी, शा.स्वा. आनंदप्रियदासजी (महादेवनगर), स्वा. हरिकृष्णदासजी (एप्रोच), स्वा. कुंजविहारीदासजी, स्वा. धर्मस्वरुपदासजी, स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी, माधव स्वामी आदि पधारे थे । सभा के संचालक शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी थे । प्रसंग में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल जामफलवाडी तथा महादेवनगर की सेवा प्रशंसनीय थी । महोत्सव कमिटी के सभी भक्तोंने सुंदर आयोजन किया।

(स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

वरसोडा में पाटोत्सव प्रसंग पर पारायण का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा आशीर्वाद से प.पू. लालजी महाराश्री के सानिध्य में ता. ५-२-१३ से ९-२-१३ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर वरसोडा के पाटोत्सव तथा शाकोत्सव के साथ-साथ श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण का आयोजन किया गया।

स.गु.स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा शा.पी.पी. स्वामी (नाराटणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से सुंदर आयोजन किया गया, जिस में स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) वक्तापद पर बिराजमान थे । भक्तों को सत्संगिजीवन की कथा का रसपान करवाया था । गाँव के सभी क्षत्रिय भक्तों ने सेवा प्रदान की । अंतिम दिन प.पू. लालजी महाराजश्री मंदिर में पधारे थे । अन्नकूट की आरती करके शोभायात्रा में जुड़े थे । तथा सभा में कथा की पूर्णाहुति की तथा शाकोत्सव मनाया । पारायण में स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्मदासजी (कालुपुर महंतश्री), शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी, माधव स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी, कुंज स्वामी आदि संतगण पधारे थे। दरबारी गाँव रसोडा में सभी दरबारी भक्तों की सेवा सत्संग देखकर प.पू. लालजी महाराजश्री प्रसन्न हुए (स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदाजी, कोटेश्वर गुरुकुल)

गवाडा में ३१ वाँ वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वदा से तथा स.गु.स्वा. देवप्रकासदासजी तथा स.गु.शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा का ३१ वाँ पाटोत्सव तथा हनुमानजी तथा गणपतिजी महाराज की प्रतिष्ठा ता. १३-२-

१३ से ता. १७-२-१३ तक गवाडा गाँव में धूमधाम सम्पन्न की गयी थी।

महोत्सव के उपलक्ष्य में नाना विधकार्यक्रम किये गये थे। जिस में श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण, श्री घनश्याम जन्मोत्सव, २१ गाँवो में सत्संग सभा, संहिता पाठ, ३१ घन्टे तक धुन, ३१ यजमान द्वारा हरियाग, व्यसन मुक्ति अभियान, ३१ नूतन पूजानावली विधि, ब्लड केम्प, मेडिकल केम्प, ३१ लाक स्वामिनरायण महामंत्र लेखन, अन्नकूट शोभायात्रा, नगरयात्रा, अभिषेक इत्यादि कार्यक्रम किये गये थे। जिस में सत्संगिजीवन पारायण के वक्ता स्वा. रामकृष्णदासजी थे।

प्रथम दिन संतो के हाथों से दीप प्रागट्य किया गया था। यजमान द्वारा कथा वाचक का पूजन अर्चन किया गया था। कथा के प्रारम्भ में स्वा. हरिकृष्णदासजी पधारे थे। नारायणवल्लभदासजी सुंदर उद्बोधन किये थे। प्रथम दिन घनश्याम महाराज का उत्सव मनाया गया था। तीसरे दिन प.पू. बड़े महाराजश्री सभा में पधारे थे। इसके साथ शाकोत्सव भी किया गया था। चौथे दिन प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। भक्तों को आशीर्वाद देकर सन्तुष्ट किये थे। दूसरी तरफ बहनो की सभा में प.पू. गादीवालाश्री भी पधारकर दर्शन-आशीर्वाद का सुख प्रदान किया था। सायंकाल की कथा में श्री नरनारायणदेव का उत्सव मनाया गाय था। सायंकाल श्री नुमानजी तथा श्री गणेशजी की नगर में शोभायात्रा निकाली गयी थी। अन्तिम दिन प.पू. लालजी महाराजश्री की शोभायात्रा नीकाली गयी थी। सभा में सभी यजमानों को प्रसादी की मूर्ति दी गयी थी। अन्त में प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

इस महोत्सव के यजमान तथा पाटोत्सव के यमजान ने सेवा का लाभ लेकर जीवन को धन्य बना दिया। अन्य हरिभक्त भी इस कार्यक्रम में तन, मन, धन से छोटी-बडी सेवा करके कार्यक्रम को सुन्दर रुप दिया था।

इस इवसर पर अनेक तीर्थस्थानों संत पधारे हुये थे। सभी ने आशीर्वचन दिया था, प्रवचन का लाभ सभी को मिला था। इस प्रसंग पर स्वा. व्रजभूषणदासजी दिव्यप्रकाश स्वामी, मुनि स्वामी, माधव स्वामी, ऋषि स्वामी, धर्मस्वरुप स्वामी, नीलकंठ स्वामी, बालू स्वामी, इत्यादि संत व्यवस्था उत्तम किये थे। सभा संचालन चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था। (स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

भीमपुरा (माणसा) में पांचवां पाटोत्सव सम्पन्न

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान घनश्याम महाराज का पंचम वार्षिक उत्सव ता. २०-२-१३ से २४-२-१३ तक मनाया गया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा देवप्रकाश स्वामी एवं. पी.पी. स्वामीकी प्रेरणा से यह कार्यक्रम सम्पन्न किया गया था।

पाटोत्सव, महोत्सव के उपलक्ष्य में छोटे बड़े बहुत सारे कार्यक्रम किये गये थे। शोभायात्रा के प्रसंग में उत्साह पूर्वक सभी ने भाग लिया था। श्रीमद् भागवत कथा के वक्ता शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी थे। महोत्सव के प्रथम दिन प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी संत मंडल के साथ पधारे थे। महंत स्वामी के हाथ से प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया था। प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथो कथा का प्रारंभ किया गया था। ''कीर्तन वंदना'' सीडी का विमोचन किया गया था। बाद में प.पू. बड़े महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था. पूर्णाहुति पर्संग पर प.पू.ध.ध. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू. गादीवालाजी महोत्सव में पधारी थी। भव्य शोभायात्रा के बाद प.पू. महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री कथा पूर्णाहुति करने के लिये सभा में पधारे थे. बहनों की सभा में प.पू. लगादीवालाजी दर्शन आशीर्वाद का लाभ देने के लिये पधारी थी। कथा पूर्णाहुति के बाद पू. महाराजश्री यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये थे। अनेक तीर्थस्थानों से संत पधारे हुए थे। अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

महोत्सव की व्यवस्था संत हरिभक्त मिलकर किये थे। जिस में व्रजवल्लभ स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी, माधव स्वामी, कुंज स्वामी, ऋषि स्वामी, व्रज स्वामी, इत्यादि संत थे। श्री न.ना.देव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी।

(स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

सिंधाली श्री स्वामिनारायण मंदिर का १५ वां पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू.शा.स्वा. आत्मप्रकादासजी तता पू.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के गाँव में स्थित श्री स्वामिनारायण मंदिर स्वामिनारायण भगवान, श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृ ृणदेवों का १५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव २१-२-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो सम्पन्न किया गया था । इस प्रसंग पर ता. १९-२-१३ से २१-२-१३ तक महाविष्णुयाग का आयोजन किया गया था । २१-२-१३ को प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे उस समय उनका दिव्य स्वागत किया गया था । बाद में मंदिर में विराजमान ठाकुरजी का अभिषेक छप्पन भोग, आरती की गयी थी । प्रासंगिक सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री तथा संत पधारे हुये थे । प्रथम प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया गया था । सभा में जेतलपुर से पू. पी.पी. स्वामी धोलका से पूर्णप्रकाश स्वामी, भक्तिवल्लभ स्वामी कलोल से वी.पी. स्वामी, कालुपुर से जे.के. स्वामी पधारे हुये थे । अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । सभी को आशीर्वचन में नियम, निश्चय, पक्ष रखने की बात कहे थे । प.पू. महाराजश्रीके साथ संत नवा गाँव पदार्पण किये थे । इस प्रसंग का आयोजन नवा गाँव, सिंधाली गाँव के गुरु राम स्वामी (रंग महोल के पुजारीजी)ने किया था ।

समग्र महोत्सव का कार्यभार स्वंय सेवकोने सम्हाली थी । (साधु पी.पी. स्वामी, जेतलपुरधाम)

श्रीप्रभा हनुमानजी महाराज का वार्षिक प्रतिष्ठा तिथि महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा प्रतिष्ठित प्रभा हनुमानजी महाराज जमीयतपुरा का वार्षिक प्रतिष्ठा तिथि महोत्सव पौष शुक्ल पुमन ता. २४-१-१३ से २८-१-१३ तक भव्य उत्सव मनाया गया था । इस प्रसंग पर पंच दिनात्मक श्रीमद् भागवत एकादश स्कंधकी कथा का आयोजन किया गया था । जिस के वक्ता स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी थे । इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री प्रथम दिन पधारकर आशीर्वाद प्रदान किये थे । अमदावाद देशका सारंगपुर अर्थात् जमीयतपुरा प्रभा हनुमानजी मंदिर । ता. २५-१-१३ को प.पू. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी । दोपहर से समूह सुंदरकांड का आयोजन किया गया था । ता. २७-१-१३ मारुति यज्ञ का प्रारंभ किया गया था । २८-१-१३ को हनुमानजी महाराज का महाभिषेक किया गया था । बाद में अन्नकटू की आरती तथा मारुति यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी थी । मारुत सभा मंडप में कथा की पूर्णाहुति स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा यजमान परिवार द्वारा की गयी थी । इस प्रसंग पर नाना धामो से संत वर्य पधारे हुये थे । प्रासंगिक सभा में संतोने प्रसंगोचित प्रवचन किया था । सभा में यजमानो का सन्मान किया गया था । अन्त में शाकोत्सव तथा पाटोत्सव का प्रसाद ग्रहण करके सभी धन्य हो गये थे । सभा संचालन शा. भक्तिनंदनदासजीने किया था । समग्र आयोजन गवैया चन्द्रप्रकाशदासजी तथा निलेश भगतने किया था ।

(शा. विजयप्रकाश स्वामी, जमीयतपुरा)

उवारसद गाँव में वार्षिक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी, आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से उवारसद गाँव में प.पू. लालजी महाराजश्री ने प्रतिष्ठा करके इस संप्रदाय में इस गाव का नाम प्रथम क्रम में रख दिया है इस गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर की प्रतिष्ठा होने से भाईयों तथा बहनों के सत्संग का महत्व बढ गया है । वार्षिक प्रतिष्ठा विधि१२-२-१३ से १६-२-१३ तक धूमधाम से सम्पन्न हुई । इस प्रसंग में पंचदिनात्मक सत्संगिभूषण कथा का भी आयोजन किया गया था । वक्तापद पर स्वामी पुरुषोत्तमप्रकादासजी (जेतलपुरधाम) थे । इस प्रसंग पर प.पू. गादीवालाजी, प.पू. बड़ी गादीवालाजी बहनों को आशीर्वाद देने के लिये पधारी थी । इस प्रसंग पर सभी धामो सेसन्तवर्य पधारे हुये थे । सां.यो. बहने भी पधारी थी । कथा के समापन पर प.पू. आचार्य महाराजश्री १६-२-१३ को पधारे थे, उस समय दिव्य स्वागत की व्यवस्था की गयी थी । बहनो के मंदिर में श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक किया गया था । दोनो मंदिरो में आरती उतारकर पू. महाराजश्री सभा में पधारे थे । पुस्तक पूजन तथा व्यासनपूजन पू. महाराजश्री ने किया था । यजमान के द्वारा पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन किया गया था । आगामी वर्षो में होने वाले पाटोत्सव की भी घोषणा की गयी थी । युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी ।

सभा संचालन भक्तिनन्द स्वामीने किया था । अन्त में सभी लोग प्रसाद लेकर विसर्जित हुये थे ।

(प.भ. घनश्यामभाई पटेल)

बाकरोल गाँव में चतुर्थ प्रतिष्ठा तिथि महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से बाकरोल गाँव में विराजमान भगवान स्वामिनारायण आदि देवों का पाटोत्सव ता. १७-५-१३ को धूमधाम से मनाया गया था । पूरे गाँव में ठाकुरजी की शोभायात्रा निकाली गयी थी । बाद में सभा में बालको द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था । आगन्तुक संतो का सन्मान किया गया था । यजमान परिवार का तथा मेहमानो का भी स्वागत किया गया था । अन्त में भक्तिनन्द स्वामीने कथा के रुप में आशीर्वाद दिया था । स्याम स्वामी, भक्तिवल्लभ स्वामी, हरिजीवन स्वामी, बलदेवप्रसाद स्वामी इत्यादि संत इस कार्यक्रम में पधारे हुये थे । सभी प्रसाद लेकर स्वस्थान पधारे थे । (दिनेशभाई केराभाई पटेल)

कोचरब पालडी में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर धाम के महंत स्वामी आत्मप्रकसासजी तथा पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से कोचरब-पालडी अमदावाद में ता. १७-२-१३ को सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में स्वामी भक्तिनन्द दासजी ने कथा के माध्मय से सत्संगी भक्तोंको सदुपदेश दिया था । समग्र आयोजन वी.पी. स्वामी की देखरेख में हुआ था । (कलोल-पंचवटी महंतजी)

जेतलपुरधाम में बहनो द्वारा शाकोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वा. आत्मप्रकादासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से तथा बहनों की हवेली की महंत सां.यो. बचीबा के मार्गदर्शन से भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । इस प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । उन्हीं के हाथो से शाग बघारा गया था । यह कार्यक्रम महिला मंडल द्वारा बडी भव्यता के साथ सम्पन्न किया गया था । प.पू. गादीवालाजीने अपने आशीर्वाद में बताया कि नूतन बहनो के मंदिर निर्माण से रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की प्रसन्नता सभी को प्राप्त होगी । सां.यो. बहनो की प्रेरणा से महिला मंडल की सेवा सराहनीय थी । इस कार्यक्रम में करीब ३०० जितनी बहने प्रसाद तथा दर्शन का लाभ लेकर जीवन को धन्य बनाई थी । (सां.यो. बनिताबा तथा सां.यो. संगीताबा)

न्यु राणीप में भव्य शाकोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से एवं स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से न्यु राणीप विस्तार में ता. ५-१-१३ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया था।

ऐसा दिव्य शाकोत्सव का वहाँ के नवयुवक मंडल के कार्यकर्ता बड़े उत्साह के साथ मनाये थे । इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । भक्तों के द्वारा प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन किया गया था ।

इसके बाद प.पू. बड़े महाराजश्रीने शाक का वघार किया था । जिसका दर्शन करके सभी धन्य हो गये थे । अन्त में पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

इस प्रसंग पर महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. बालस्वरुपदासजी, व्रज स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी, धर्मस्वरुपददासजी तथा विश्वस्वरुपदासजी पधारे हुये थे । बूट भवानी पार्टी प्लोट में यह शाकोत्सव मनाया गया था, जहाँ पर करीब ६ हजार जितने भक्त प्रसाद ग्रहण किये थे ।

(स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

खेरोल गांव में साकोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में युवक मंडल द्वारा ता. २७-१-१३ को शाकोत्सव का आयोजन किया गया था ।

प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों शाग का वधार किया गया था । शाकोत्सव में गाँव के अगल बगल वाले गांव के लोंग भी भाग लिये थे । महिलायें रोटी बनाने की सेवा की थी । स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने शाकोत्सव की महिमा समझाई थी । बाद में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

इस प्रसंग पर माधव स्वामी (प्रांतीज) सुखनंदन स्वामी, विश्वस्वरुप स्वामी, माधवप्रिय स्वामी, दिव्यप्रसाद

स्वामी, योगी स्वामी इत्यादि संत पधारे थे।

इस कार्यक्रम के आयोजन की प्रेरणा पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंत) ने दी थी। गाँव के हरिभक्त तथा न.ना.यु. मंडल की सेवा सराहनीय थी।

(स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

घाटलोडीया चांदलोडिया सोला विस्तार में चतुर्थ सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से युनिक सीटी (कोमन प्लोट) सोला में ता. १०-२-१३ रविवार को सायंकाल ४-३० से ७-३० तक प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ सानिध्य में तथा पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंत स्वामी) प्रेरित सभा में स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) इत्यादि संतोने प्रेरक प्रवचन किये थे। पूरक पटेल द्वारा कीर्तन भजन किया गया था।

आज की सभा के यजमान कनुभाई वी. पटेल, श्री जयेशभाई, श्री नटुभाई, श्री विनुभाई पटेल थे।

प्रत्येक रविवार को तथा एकादशी को रात्रि में ८-३० से १०-३० तक नियमित सभा का आयोजन होता है। वसंत पंचमी को शिक्षापत्री जयंती के निमित्त शिक्षापत्री का समूह पठन किया गया था। सभा स्थल श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण सत्संग मंडल (घाटलोडिया-चांदलोडिया-सोला विस्तार) गणेश पार्क कोम्पेलक्ष वी-१, आई.डी. पटेल स्कूल रोड, घाटलोडीया, अमदावाद, रमेशभाई पटेल : ९५८६४२२६०१.

अक्षरमुक्त बजीबा के वीजापुरधाम में प्रथम शाकोत्सव सम्पन्न

सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से मुक्तराज बजी बा के प्रसादीभूत बीजापुर गाँव में जहाँ पर श्रीहरि ११ बार अपने चरण से पवित्र किये थे उस भूमि में ता. १०-२-१३ को भव्य शाकोत्सव सम्पन्न हुआ था।

इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। अपने वरद् हाथों से शाकोत्सव को सम्पन्न करके यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये थे। शाकोत्सव प्रसंग पर बालवा, विसनगर, गोजारिया तथा कांठा विस्तार के गावो से दश हजार जितने हरिभक्त लाभ लिये थे। प्रासंगिक सभा में स्वा. कृष्णदासजी, शा. चैतन्यस्वरुपदासजी, स्वा. उत्तमप्रियदासजी इत्यादि सन्तो ने अमृतवाणी का लाभ दिया था। अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्री ऐसे प्रसादी के गाँव में बजी बा के स्मरणार्थ एक मंदिर बने ऐसा सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभा संचालन पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंत)ने किया था। अ.मू. बजीबा की प्रसादी की जगह पर स्मृति मंदिर का निर्माण कार्य प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंत स्वामी) के मार्गदर्शन में श्री पोपटलाल पटेल तथा कमेटी के सदस्य कार्यभार सम्हाल लिये है। (महेन्द्रभाई पटेल

श्री स्वामिनारायणमंदिर विहार (दोनो मंदिर) में शाकोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वा. हरिकृष्णदासजी एवं भंडारी सूर्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में ता. ९-१-१३ को प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथो से शाकोत्सव मनाया गया था। इस प्रसंग में यजान प.भ. नटवरलाल मणीलाल पटेल थे।

प्रासंगिक सभा में स्वा. नारायणवल्लभदासजीने सभा संचालन किया ता। अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्री ने समस्त सभा को हार्दिक आशीर्वा दिया था। (कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायणमंदिर जडेश्वर पार्क महादेवनगर में शाकोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में शाकोत्सव मनाया गया था।

इस प्रसंग पर स.गु. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा स्वा. लक्ष्मणजीवनदासजी एवं स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी ने प्रसंगोचित व्याख्यान दिया था।

सायंकाल ५-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। सर्व प्रथम भाईयों एवं बहनो के मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में पधारे थे। जहाँ दिव्य शाकोत्सव में शाग का वघार करके भक्तजनों को दर्शन का लाभ दिये थे। सभा में सभा संचालन चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था।

(को. नटुभाई पटेल)

कुहा गाँव में शाकोत्सव सम्पन्न

श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा कांकरीया मंदिर के महंत स्वा. गुरुप्रसाददासजी एवं आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से कूहा गाँव में प.भ. विनोदभाई भलाबाई पटेल परिवार तरफ से भव्य शाकोत्सव, महापूजा शोभायात्रा इत्यादि का कार्यक्रम किया गया था।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प्रातः ८-०० बजे पधारे थे। इस अवसर पर भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी। प.पू. महाराजश्रीने मंदिर में महापूजा की पूर्णाहुति करके ठाकुरजी की आरती की। बाद में सभा में आकार शाग का वघार किये थे। इस प्रसंग पर प्रत्येक धाम से संत पधारे हुये थे। अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभाजनो को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

यजमानश्री के यहाँ प.पू. महाराजश्री पधारे थे। सभा संचालन स्वा. यज्ञवल्लभदासजीने किया था। यहाँ गाँव धर्मकुल का निष्ठावान है। (श्री न.ना. यु. मंडल, कूहा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आनंदपुरा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी एवं देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा यहाँ के गाँव के हरिभक्तों के सहयोग से ता. ३-२-१३ रविवार को प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से भव्य शाकोत्सव मनाया गया था।

इस अवसर पर सभा के भीतर संतो की प्रेरकवाणी के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

इस शाकोत्सव का हजारो हरिभक्तों ने लाभ लिया था। बहनों की सेवा भी प्रेरणास्वरुप थी। इस प्रसंग पर ब्र. राजेश्वरानंदजी जे.पी. स्वामी, जे.के. स्वामी इत्यादि संत पधारे हुये थे। (कोठारी हर्षदभाई)

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली धाम वसंत पंचमी का उत्सव सम्पन्न

मूली धाम में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का वार्षिक पाटोत्सव माघ शुक्ल पंचमी को प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा पपू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में मनाया गया था।

माघ शुक्ल पंचमी को ५-०० ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का दिव्य अभिषेक किया गया था। बाद में सभा में शिक्षापत्री का पूजन अर्चन एवं वांचन किया गया था। इस प्रसंग पर स्वा. श्यामसुंदरदासजी के पुरुषार्थ से गाँव के मुख्यद्वार पर "श्री राधाकृष्णदेव प्रवेश द्वार" का कात पूजन प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हातों किया गया था। दोपहर १२-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री मंदिर के चौक में रंग खेले थे। इस अवसर पर हजारो नरनारी रंगोत्सव का दर्शन करके धन्यता का अनुभव कर रहे थे। बहनो को दर्शनका लाभ देने के लिये प.पू. गादीवालाजी पधारी थी। प्रासंगिक सभा में प.पू. महाराजश्रीने सभी हरिभक्तों से बताया कि जो मंदिर में दान दे उसकी पक्की रसीद अवश्य ले। इस प्रसंग के मुख्य यजमान श्रीमती वंशीबहन बाबूभाई पटेल थी। रंगोत्सव के यजमान श्रीमती कृष्णाबहन नवीनभाई तथा शिक्षापत्री पूजन के यजमानश्री धीरुभाई गोरधनभाई थे। प्रासंगिक सभा में श्यामसुंदर स्वामी तथा अमदावाद, सुरेन्द्रनगर एवं चराडवा के महंत संतोने प्रेरक प्रवचन किये थे। सभा संचालन शैलेन्द्रसिंह चूडमसाने किया था। भोजनालय की व्यवस्था को. कृष्णवल्लभदासजीने देखी थी। (को. व्रज स्वामीने भी सुंदर आयोजन किया था।

(शैलेन्द्रसिंह झाला

धांगधा से मूली धाम पैदल यात्रा

प.पू.ध.धथु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से धांगधा से मूली तक की पैंदल यात्रा आयोजित की गयी थी, जिसमें ३५० जितने भाई बहन भाग लिये थे।

(प्रति. अनिलभाई दुधरेजिया)

उमरडा गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर का जीर्णोद्धार करके पुनः प्राण प्रतिष्ठा ता. १२-२-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों की गयी थी।

इस प्रसंग पर ता. ९-२-१३ से १३-२-१३ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण शास्त्री श्रीजीप्रकाशदासजी के वक्ता पद सम्पन्न हुई थी । इस अवसर पर त्रिदिनात्मक हरियाग, अन्नकूट इत्यादि कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था ।

इस उत्सव के यजमान श्री मनुभाई पटेल तथा कथा के यजमान झवेरभाई तथा श्री महेशबाई जोधाणी थे । बहनों को दर्शन का लाभ देने के लिये प.पू. गादीवालाजी पधारी थी । अमदावाद, मूली, ध्रांगधरा, चराडवा, बोपल से संत पधारे थे । साध्वी लोग भी पधारी थी । सभा के यजमान परिवार को प.पू. महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । सभा संचालन प्रेमवल्लभदासजीने किया ता । को. कृष्णवल्लभदासजीने तथा धनश्यामभाईने श्री न.ना.देव युवक मंडलने सेवा का कार्य किया था । सभी भक्त दर्सन करके धन्य हो गये थे । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर घनश्यामनगर मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के गाँव में भाइयों तथा बहनों के श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न किया गया था ।

इस प्रसंग पर ता. २६-१-१३ से ता. १-२-१३ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण स्वामी धर्मवल्लभदासजी (बोपल) शा. नीलकंठचरणदासजी के वक्तापद पर हुई थी । ता. १-२-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अपने वरद् हाथो से दोनो मंदिरों में मूर्ति प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे की थी । प्रासंगिक सभा में मूलीधाम के श्रीजीस्वरुप स्वामी को प.पू. आचार्य महाराजश्री प्रसन्न होकर पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद दिया था । अन्त में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । छोटे से गाँव में इस कार्यक्रम में हजारो की संख्या में सात दिन तक सभी लोग लाभ लिये थे । (श्री अनिलभाई दुधरेजिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वामी नरनारायणदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में शाकोत्सव मनाया गया था । इस प्रसंग पर स्वा. नारायणप्रसादासजी, स्वा. हरिओंप्रकाशदासजी (नारणपुरा), प्रेमस्वरुप स्वामी, कृष्णवल्लभ स्वामी तथा योगी स्वामी ईत्यादि संतोने प्रेरक प्रवचन किये थे । अन्य सेवा में के.पी. स्वामी, भानु स्वामी, मुक्तस्वरुप स्वामी तथा कालू भगत थे । (कोठारीश्री)

विदेश सत्संग समाचार

वोशिंग्टन डी.सी. आई.एस.एस.ओ.

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से वोशिंग्टन डी.सी. के स्वामिनारा?ण मंदिर में जनवरी ५, १२, १९, २६ शनिवार को सत्संग सभा, वचनामृत वाचन, कीर्तन भजन, जनमंगल पाठ, आरती, नित्य नियम होता था । २७ जनवरी को चेरीहील मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कर कमल से शाकोत्सव मनाया गया था । जिस में १८०० जितने हरिभक्त शाकोत्सव के प्रसाद का लाभ लिये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभी भक्तों के ऊपर प्रसन्न होकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।

प्रति शनिवार को श्री हनुमानजी की सामूहिक आरती की जाती है । एकादशी को भी आयोजन किया जाता है सभा में बडी संख्या में भक्त उपस्थित रहते हैं । (कनुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन टेक्सास

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा पुजारी स्वामी घनश्यामचरणदासजी, गवैया स्वामी, दिव्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के ह्युस्टन मंदिर में उत्तरायण का प्रसंग धूमधाम से मनाया गया था ।

२८ जनवरी पौष शुक्ल पूनम को सुंदर सभा का आयोजन किया गया था । जिस में श्रीजी महाराज के लीलाचरित्र का वर्णन किया गय था ।

वसंत पंचमी को शिक्षापत्री का पूजन-पाठ तथा ९-२-१३ को शाकोत्सव किया गया था । जिस में बहनोने रोटी शाग बनाकर सेवा का कार्य सम्हाला था । गवैया स्वामी द्वारा भक्ति के कीर्तन गाया गया था । युवक मंडल तथा संतोने खूब सराहनीय कार्य किया था । प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से बाल शिबिर का आयोजन किया गया था । जिस में १०० जितने बालक भाग लिये थे । (रमेश पटेल)

आई.एस.एस.ओ. पियोरिया चेप्टर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े

महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के आई.एस.एस.ओ. पियोरिया चेप्टर मे सुंदर सत्संग होता है। प्रति रविवार को सायंकाल ६ बजे से ८ बजे तक सभा होती है। अमदावाद से पधारे हुये विद्वान संत निर्गुणदासजी दो दिन तक रुककर हरिभक्तो को महापूजा कराकर सत्संग का लाभ दिये थे। २६ जनवरी को पपू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री शिकागो पधारे थे, उस समय पियोरीया के हरिभक्त दर्शन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे।

१६ फरवरी वसंत पंचमी को गोविंदभाई पटेल के यहाँ सभा रखी गयी थी। जिस में शिक्षापत्री का पूजन-पठन किया गया था। इस सभा में शिकागो, ब्लोमीस्टन इत्यादि शहरो से १५० जितने हरिभक्त पधारे थे। वचनामृत २७३ ग.प्र.प्र. १७ को सुंदर चर्चा करके बालकों को शिक्षा दी गयी थी। (रमेश टी. पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में वसंत पंचमी-शिक्षापत्री जयंती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से कोलोनिया मंदिर में वसंत पंचमी को शिक्षापत्री जयंती का उत्सव मनाया गया था। इस प्रसंग पर पू.शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा कोलोनिया के महंत स्वामी ज्ञानप्रकाशदासजी के शुभ सानिध्य में सत्संग सभा हुई थी। सिंहासन में विराजमान घनश्याम महाराज के शिक्षापत्री लिखते हुए तद्रुप मे दिखाया गया था। महंत स्वामी तथा ज्ञानप्रकाश स्वामी ने शिक्षापत्री का पूजन के शा.स्वा. निर्गुणदासजीने आरती उतारे थे। स्वामीने शिक्षापत्री पर ज्ञानपूर्वक प्रवचन किया था। प्रत्येक हरिभक्तों को स्वामीने पुष्प की भेंट की थी। बहने भी शिक्षापत्री का पूजनक रके जनमंगल का पाठ की थी। (प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो (आई.एस.एस.ओ.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के सत्संग की प्रवृत्ति अच्छी चलती है। इस मास में सत्संग सभा, शाकोत्सव, वसंत पंचमी, शिक्षापत्रीका पूजन इत्यादि का कार्यक्रम किया गया था। कलिवलेन्ड से वासुदेव स्वामी तथा पूजारी शांतिप्रकाश स्वामीने शाकोत्सव की महिमा बताई थी। सायंकाल प्रत्येक हरिभक्त शिक्षापत्री का पूजन-अर्चन करके २१२ श्लोक का समूह पठन संतो के साथ किये थे। (वसंत त्रिवेदी)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

सोजा : श्री अरविंदभाई तथा सुरेशभाई के पिताश्री प.भ. अमृतभाई कचरदास मोदी (उम्र ८६ वर्ष) ता. ५-१-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

केरा (कच्छ) : प.भ. जेठालाल सवाणी (लंडन) के पू. पिताजी श्री धनजीभाई जादव सवाणी ता. २२-२-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अमदावाद : श्री रमेशभाई रणछोडभाई मारफतीया (अमेरिकावाला) के छोटेभाई श्री नवीनभाई रणछोडभाई मारफतीया की धर्मपत्नी चन्द्रिकाबहन नवीनभाई रामफतीया ता. ५-२-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

मितली ता. खंभात : श्री अभेसिंह देवीसींहजी राओल (उम्र ७२ वर्ष) ता. ३-१-१३को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अमेरिका-नोर्थ केरोलीना केरी : श्री विष्णुभाई नारणदास पटेल की पुत्री अल्पाबहन तथा दामाद प.भ. हेमांगकुमार महेन्द्रभाई पटेल ता. ९-७-१२को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अमदावाद : प.भ. विष्णुभाई पटेल (माणसा) के साले प.भ. डाह्याभाई मगनलाल पटेल ता. ८-१-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

संतरामपुर (पंचमहाल) : प.भ. हिरालाल एल. पटेल ता. १०-२-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

शिकागो

कोलोनिया

अपने विविध मंदिरो में शाकोत्सव दर्शन

डिट्रोईट

सान होझे

जीवराजपार्क

दहेगाँव

वजीआ का विजापुर

टोरन्टो (केनेडा)

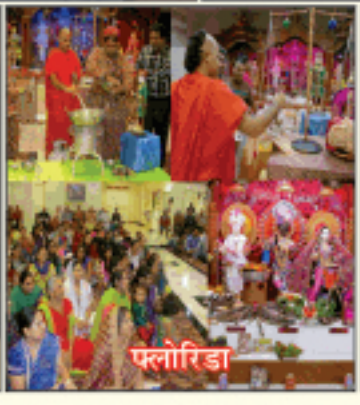

फ्लोरिडा

न्युयोर्क सत्संग सभा

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में वसंत पंचमी के उत्सव प्रसंग पर रंगोत्सव मनाते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।

जहाँ श्री स्वामिनारायण भगवान सर्वप्रथम संत-हरिभक्तों के साथ रंगोत्सव मनाये थे, उस श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद के चौक में श्रीहरि के सातवें वंशज प.पू. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा श्रीहरि के आठवें वंशज प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से

फुलहोलो-त्सव

फाल्गुन शुक्ल पूनम ता. २७-३-२०१३ बुधवार

दोपहर १२-०० बजे

यजमान

प.भ. हरेन्द्र अशोकभाई पटेल

मांडवी कच्छ-हाल लंडन

Praful Kharsani

JagadishOffset